सदीनामा

अंक - 1240, सोमवार, 28 अगस्त, 2023

मायापुर इस्कॉन ने अंतरराष्ट्रीय झूलन यात्रा महोत्सव मनाया

अन्य वर्षों की भांति इस वर्ष भी इस्कॉन के मुख्य केंद्र श्रीधाम मायापुर में पांच दिनों तक अनंत आनंद का पर्व झूलन एवं राखीपूर्णिमा मनाया जा रहा है। यह आयोजन रविवार 27 अगस्त 2023 से गुरुवार 31 अगस्त 2023 तक चलेगा। मायापुर इस वर्ष 39वां झूलन और राखी पूर्णिमा उत्सव मना रहा है। रविवार शाम पांच बजे चंद्रोदय मंदिर से रंगारंग संकीर्तन शोभा यात्रा के साथ श्री श्री राधामाधव को झूलन मंडप ले जाया गया। कार्यक्रम रात 8.30 बजे तक चला। आरती, कीर्तन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, दीप दान, हिंडोल खेल और प्रसाद वितरण इस दिन के विशेष कार्यक्रम थे। हर साल की तरह इस साल भी देश–विदेश से कई भक्तों ने इस उत्सव में भाग लिया।

झॅलन यात्रा उत्सव श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि से पूर्णिमा तिथि तक चलता है। झूलन उत्सव की शुरुआत द्वापर युग में हुई थी जो कि वृन्दावन में राधाकृष्ण की प्रेमलीला पर केन्द्रित था। पुराणों के अनुसार, द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण इस धरती पर ईश्वर के अवतार के रूप में अवतरित हुए थे। वृन्दावन में स्थापित कृष्ण और राधारानी के प्रेम और प्रेम की अभिव्यक्ति को झूलन यात्रा के रूप में मनाया जाता है। राधा कृष्ण ने सबसे पहले वृन्दावन के कुंजवन में शुद्ध प्रेम का आदान–प्रदान करके इस जीवित जगत में प्रेम को प्रकट किया और उस लीला के विभिन्न रूपों को इस युग में झूलन यात्रा में प्रदर्शित किया जाता है।

झूलन मंडप का निर्माण वर्ष भर तिल–तिल कर किया जाता है। झूलन मंडप गुरुकुल और गौशाला के बगल में स्थित है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर, ठंडी छाया वाले घोंसले, फलों से भरे फूल, मनमोहक रोशनी की मालाएं और जंगल से सजे कृत्रिम फव्वारे आपको एक और अप्राकृतिक दुनिया में ले जाएंगे। इसे प्रत्यक्ष देखे बिना इसकी अपार भव्यता को समझना कठिन है। भगवान राधाकृष्ण की झूलन यात्रा की अप्राकृतिक छवि मन के हृदय में उतर जायेगी। इस्कॉन मायापुर के जनसंपर्क अधिकारी रसिक गौरांग दास ने संवाददाताओं से कहा कि झूलन प्रेम का त्योहार है, मिलन का त्योहार है, आत्मा और आत्मा के मिलन का त्योहार है। एक दूसरे को गले लगाने का त्योहार. झूलन एवं राखीपूर्णिमा पर्व देशभक्ति, देशप्रेम एवं आध्यात्मिक विकास के पर्व हैं। मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि झूलन और राखीपूर्णिमा का त्योहार समाज के हर कोने तक पहुंचे। इस तरह, दुनिया भर में प्यार, दोस्ती, प्यार और मजबूत मानवीय बंधन स्थापित होंगे। यह रपट रमेश राय ने लिखी है।